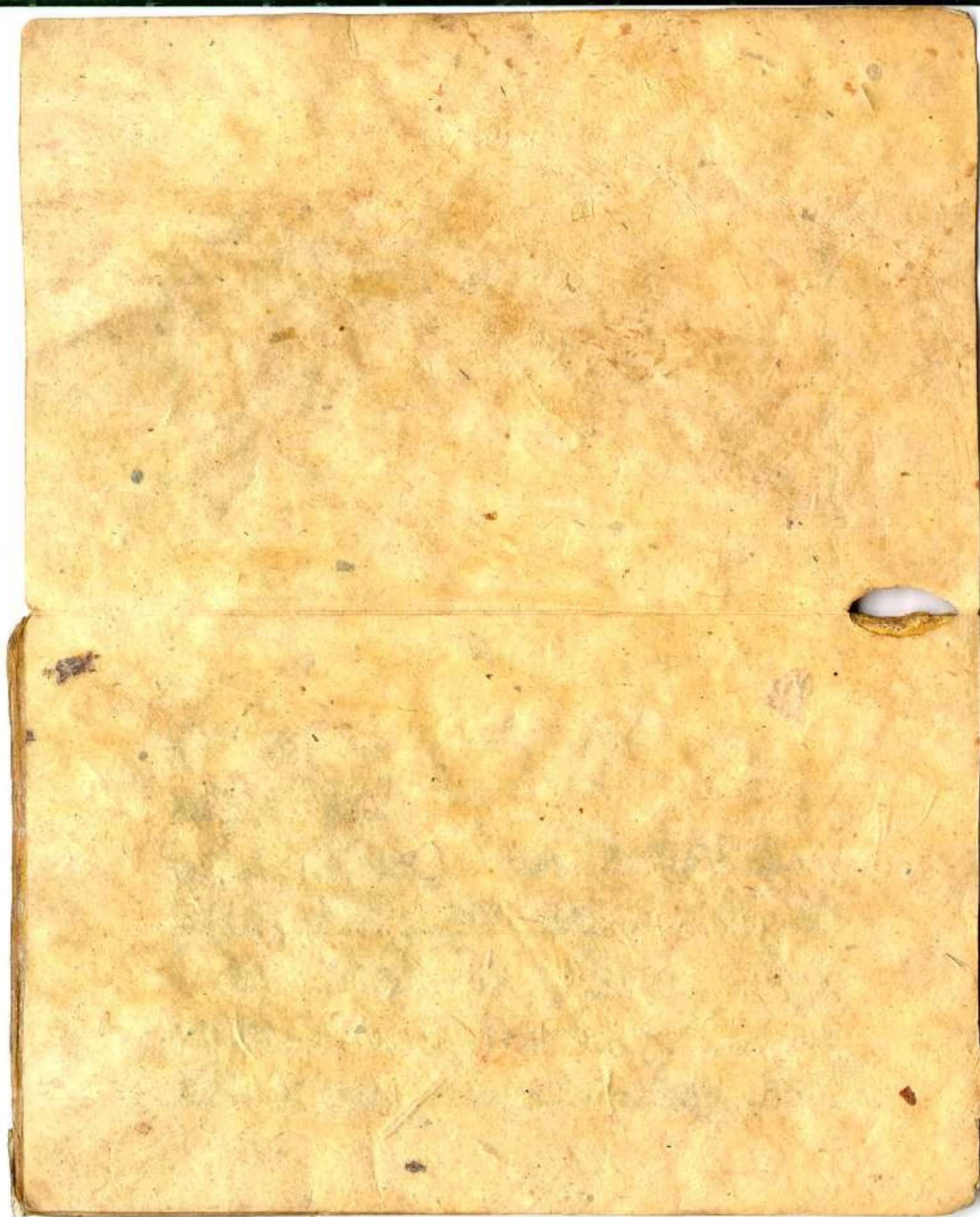


१८१ वा गमती पूजाविधि.









कोटेश्वर



हेमाल



कलस



गरुडनाशं



गणेश



वलि

वाग्मनीपूजा
आवोयध्वज



शंख



कामराज



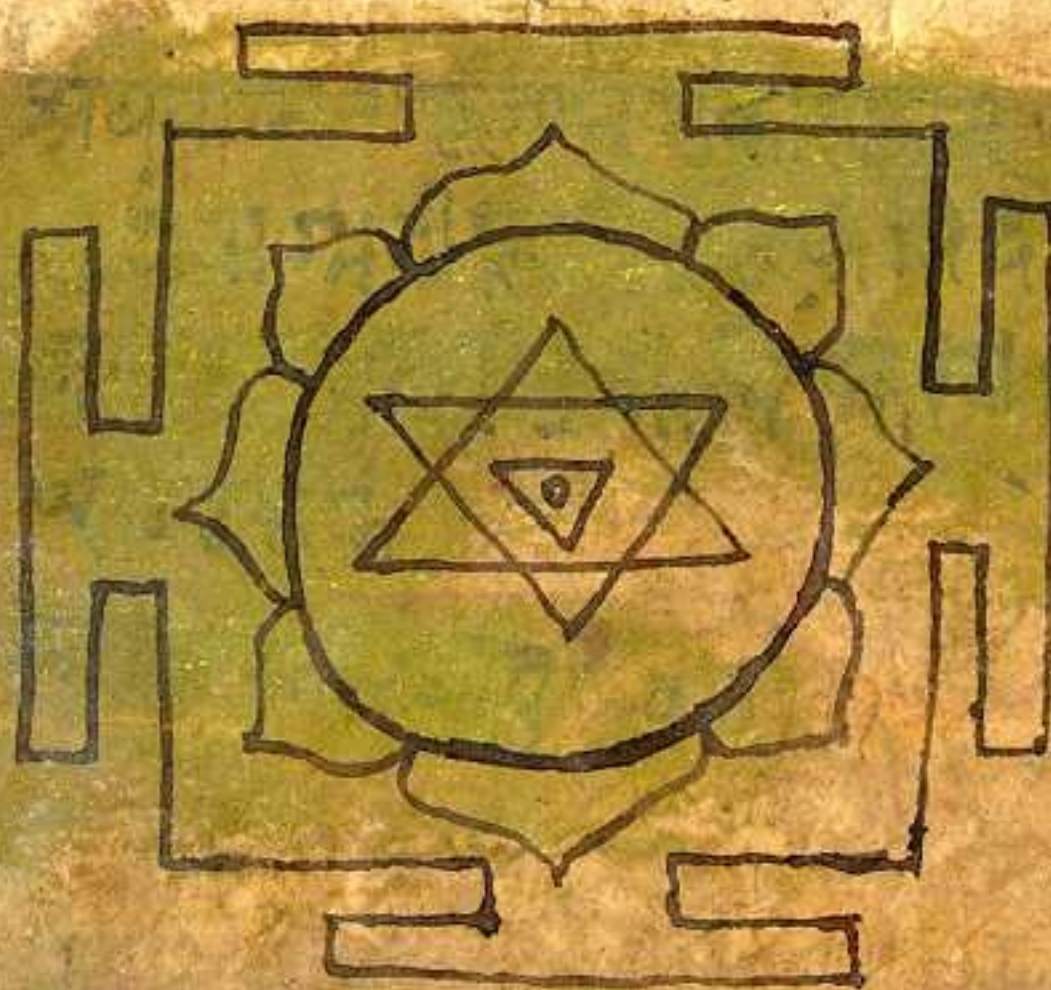
अर्घपात्र

पूजाधारि



अर्घा

पूजाभक्त



वाग्मनीयंत्रम् ॥

२०० श्रीगणेशाय नमः ॥ चन्द्रनाभत प्रपञ्चाय कलशाय ॥ यजननला

नमः गुणगणाय ॥ ॥ श्रीवाग्भती पूजा विधि
लिखत ॥ ॥ बालूकायामयनिगुप्तगिलाययं
निधाय ॥ श्रीवाग्भतीमूर्तिसंस्मरण ॥ ॥ ततः स्वा
नं कुर्यात् ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ लन ॥ ॥ ॐ ययः
पृथिव्यां ॥ ॐ दधन ॥ ॥ ॐ दधिकाव ॥ ॐ दध्या ॥ ॥
ॐ तज्जासि ॥ घृगन ॥ ॥ ॐ मधुवातामधूना ॥ म

धूना ॥ ॥ ॐ विवानामासि ॥ ॐ कर्कनया ॥ ॥ पन
ॐ लस्त्रानं ॥ ॐ स्वस्तिनव्त्वा ॥ ॥ चन्दनं ॥ ॐ य
दयक ॥ ॥ सिद्धन ॥ ॐ त्वं यविष्टदा ॥ ॥ अरु
तं ॥ ॐ दीर्घायत्वा ॥ ॥ यज्ञायवीतं ॥ ॐ यज्ञाय
वीतं ॥ ॥ ययं ॥ ॐ याः रुलिनी ॥ ॥ अथ यन्त्रं
लिखत् ॥ ॥ तय पूजां कुर्यात् ॥ ॐ अद्यादि ॥ वा

नं॥ ॥ॐ श्रीमत् ३ वाग्भतीदवीप्रसन्नदानाभस्म
दम्काम्कनामयऊमानानांमनसि यत्थपित
रुलप्राप्तिपूर्वक पक्षशयचानयूजासहित ऊ
लमूर्ति श्रीवाग्भतीयूजाकर्तुं श्रीसूर्यार्पणार्था
२॥ॐ अक्षरं॥ॐ एतन्नाययूषं २॥ ॥ततागु
नमस्कृतं॥ॐ अखण्डमधुनाकानं॥ ॥प्राणा

याम॥ गायत्री न्यासकृत्या ७ ॥तदनवाग्वक्
नंन्यासः॥ॐ अस्त्राय रु॥ ३ ॥ॐ अंगुष्ठायां २॥ॐ त
र्जनीयां स्वाहा॥ॐ मध्यमायां वषट्॥ॐ अनामि
कायां हुं॥ॐ कनिष्ठायां वोषट्॥ॐ कनकलया
रुट्॥ॐ अक्षय्यादि॥ ६ ॥ ॥अथ मूलकलन्या
सः॥ॐ वागीशाय अस्त्राय रुट्॥ॐ वागूपाय अं

गुष्टायां २॥ उं वागीधर्यो न कुनीत्यां स्वाहा ॥ उं सन
स्वसेमधमास्यां वषट् ॥ उं हिवर्गंगा ये जनासिकायां
हूं ॥ उं वाग्मयेकविद्यां वोषट् ॥ उं वागीधायैकवत
लष्टायां रुद्र ॥ तनांगन्यासः ॥ ॥ तगाहृष्टुधि
ः ॥ हंसः ॥ ॥ सहस्रदलं निधाय ॥ यें १० वामनासि
कानं १ धुनवाद्याकर्षणं ॥ ॥ नं ०४ नासिकानं धुय

ः पापपूनुषदग्धकुर्यात् ॥ ॥ यें ३२ वामनासिका
न १ धुनसर्वं रस्यंकुर्याद्विहिः ॥ ॥ वें १० वामना
सिकानं १ धुनवाद्याकर्षणंकुर्यात् ॥ सहस्रदलं रु
चंद्रं स्मृतं गृहीत्वा क्षत्रीनात्यक्तिकुर्यात् ॥ ॥
लें ०४ नासिकानं धुयार्धं धनं कृत्वा क्षुद्रक्षत्रीनं
शनश्च ॥ ॥ हूं ३२ वामनासिकानं १ धुनवाद्यैव हि

: कुर्यात्सर्वाङ्गानि न निष्कलं कं लवय ॥ मारु ॥ ॥
 तदनृजीवात्मा कुरु लिनी स्व स्व स्थान निधाय ॥ वृत्ति
 रत गुदिः ॥ ॥ अर्घपाय पूजनै ॥ ॐ गं रग च मूर्ते य ३
 चैव त्पादि ॥ ॥ जल निधाय ॥ ॥ ॐ वृक्ष रक्ष ॥
 ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ नृपाय २ ॥ ॐ ष्ठी ध्याय २ ॥ ॐ सदा ठि
 वाय २ ॥ अर्घपाय आय आवाहनादि चन्दनाकृत पृष्ण

२ ॥ धूपं प्रक्षाल्य रथ नृमूडां दक्षय ॥ ॥ आत्मन सि
 चनादि ॥ सामग्री प्रादक्षिण्य ॥ ॥ तता ध्यानं ॥ ॐ प्र
 शुनीक समासीनां कर्पू नन्द समा कलां प्र कं सि
 तानना रथयां सर्वालंकोन रक्षतिनां मोलावनद
 धाना ३ ॥ पूस्त कं चारयं कर्तः ॥ वा रयदी वाग्धती
 ध्याय चन्द्रकला डक कुरु ॥ ॥ मन्दुः ॥ ॐ ॐ ३

ॐ त्रं ३ उं श्री ३ उं की ३ उं श्री ३ सानदाये २॥ ॥ अथ
वा ॥ ॐ त्रं ३ उं की ३ उं श्री ३ उं श्री ३ सानदाये स्वाहा ॥ ॥
आत्मन ध्यान पृष्ठा २॥ ॥ ततः पञ्चवलि ॥ ॐ ग्लूग
मपतय वलिं गृह्ण २०० ॥ ॐ वृं वृकाय वलिं गृह्ण
२०० ॥ ॐ कं कृपा लाय वलिं गृह्ण २०० ॥ ॐ यो या
मिनी त्या वलिं गृह्ण २०० ॥ ॐ गुं गुन व वलिं गृह्ण २

०० ॥ ॐ सर्व त्या त त्या वलिं गृह्ण २०० ॥ आवाहना
दि ॥ ॥ जाय साय ॥ ॐ नि त्या न न्द य न मिति ॥ ॥
ततः पूजनं ॥ ॐ आ ध्या न ठ क य २ ॥ ॐ अनन्ता स २ ॥
ॐ क न्दा य २ ॥ ॐ ना ना य २ ॥ ॐ प द्मा य २ ॥ ॐ य रा य
२ ॥ ॐ क षा ना य २ ॥ ॐ क ल्पि का य २ ॥ ॐ म क ना स ना
य २ ॥ ॥ पूर्ववर्तुल मूर्त्त ध्यानं ॥ ॐ वाग्भती द बो ध्या

नाय ३

नमः २॥ ॥ मूलमनुसयाया ॥ ३॥ ॥ हृद
यादि ॥ ॐ वायुपाये हृदयाय ॥ २॥ ॐ वागीध्वर्थे हि
नमः ॥ ॐ मनस्वत्येति रवाये वोषट् ॥ ॐ ऋग्वेगंगा
येकवचाय हुँ ॥ ॐ वाग्मये नमः ॥ ॐ वायवे वोषट् ॥ ॐ
वागीध्वये मस्तु याय हुँ ॥ ॐ हृदि हृदयादि ॥ ॥ त
तः आवस्य पूजा ॥ ॐ मलिमतीतीर्थाय २॥ ॐ नूतया
दा हवतीतीर्थाय २॥ ॥ गंगदि पूजा ॥ ॐ गंगायै २॥

ॐ यमुनायै २॥ ॐ मनस्वत्यै २॥ ॐ रगदावर्थे २॥ ॐ न
र्मदायै २॥ ॐ सिंधवे २॥ ॐ कावर्थे २॥ ॐ हृदि ॥ ॥
ततः कोणिकी पूजा ॥ ॐ गुरुगुवाको णिके २॥ ॐ पा
पघ्नीको णिके २॥ ॐ रुद्रावतीको णिके २॥ ॐ महा
पराको णिके २॥ ॐ वनदाको णिके २॥ ॐ दृष्वघ्नी
को णिके २॥ ॐ रणे सवाहिनीको णिके २॥ ॥ ॐ हृदि ॥

ततागलुकीपूजा॥ॐ नत्वप्ररागलुके॥ॐ स्व
लुप्ररागलुके॥ॐ धर्मधानागंतुके॥ॐ यरह
धानागलुके॥ॐ विध्वधानागंतुके॥ॐ सितप्ररा
गंतु॥ॐ ह्रस्वप्ररागंतु॥ॐ ति॥ ॥ॐ तिम्रकाधर्ज
काटितीर्थय॥ ॥ॐ वृक्षर॥ॐ विप्रव॥ॐ
सदासिवाय॥ ॥ॐ गायत्री॥ॐ सावित्री॥ॐ मनस्वी॥ ॥

ॐ आदित्यादिनवग्रहस्था॥१॥ ॥ॐ इन्द्रादिद
हालोकपालस्था॥१०॥ ॥ॐ अश्वत्थामायद्यचि
नउदीविस्था॥११॥ ॥ॐ यशस्वकुसदागिय॥१२॥ ॥
ॐ प्रतियदादियश्वदहातिथिस्था॥१३॥ ॥ॐ ह्रस्वि
कादिअष्टाविंशतिनक्षत्रस्था॥१४॥ ॥ॐ विष्णु
कादिसप्ताविंशतियारागस्था॥१५॥ ॥ॐ मघा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

दिवा दहना गिर्या २॥१२॥ ॥ॐ कलामूर्त्यय २॥ॐ
 काष्ठा मूर्त्यय २॥ॐ मूक मूर्त्यय २॥ॐ पद्माय २॥ॐ माता
 य २॥ॐ षष्ठ तुल्या २॥ॐ भूयनाय २॥ॐ सम्वत्सनाय
 २॥ॐ चतुर्थ्य गाय २॥ॐ कल्याय नमः॥ ॥ॐ
 हृदवता दवता दित्या २॥ॐ कूलदवता दित्या २॥
 ॐ सर्वथा दवत्या २॥ ॥ॐ ति पूजा विधिः॥ जना
 वदा चर्न ॥ गत्वा या मि ॥ॐ नमः शग व ॥ॐ यती
 ॐ

र्थानि ॥ ॐ यावकानः ॥ ॐ महाजर्जुः ॥ ॐ विष्णुः ॥
 ह्यक्षः ॥ ॐ स्वस्ति नमो नृपति ॥ ॥ धूपं ॥ ॐ धून्
 सि ॥ ॥ दीपं ॥ ॐ तज्जसि ॥ ॥ आनतिं ॥ ॐ अग्नि
 र्जति ॥ ॥ नैवयं ॥ ॐ जनयत ॥ ॥ रुद्रं ॥ ॐ याः
 रुद्रिनी ॥ ॥ ताम्बूलं ॥ ॐ नमोऽस्तुते च ॥ ॥ प्रतिष्ठा
 ॥ ॐ मना हूति ॥ ॥ सर्वं च दधार्घ्यं दद्यात् ॥ ॥ ॐ ज
 यतात ॥ ॐ जयति ॥ ॥ अस्मदमुकामुकयजमा

मनसोऽस्मिन् ॥ श्रीरघुनाथस्वामी ॥ प्रसी ॥ ४॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

नां नमनसिय रथमितरुलयापि पूर्वकं धीवाग्म
तीदधो मनमतीदधो नृदधनादवीसहिताय लू
दमर्घ्यं ॐ आपदीनकं यथा गीतिसिद्धार्थं दधित इ
लं ॥ गंगारवाय समादाय सि ॥ ॥ मधुलं ॥ आपसा
यं ॥ ॥ ॐ धीवाग्मस्यै ॥ ॥ वृक्षपिष्टाच उवाच ॥
इं नारिकेलुसम हृत नृदकं स्म विनिःसृतं वा
ग्मती विष्णुताद विकुल मूर्ध्नि नभा सुत ॥ १ ॥ नृदचू

ॐ मना इति ॥ ४४

४४ पुष्प रुत चन्दनं ॥ चन्द

मादधनं धीरवपुः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जमरस हृत आराग धनि प्रया विनि मलिमति वि
ख्याता कुल मूर्ध्नि नभा सुत ॥ २ ॥ नृदयाका हव
गंगे स्त्रय नार्थं न धूलिनः ॥ नृदधनाद विख्याता
कुल मूर्ध्नि नभा सुत ॥ ३ ॥ प्रकांगं प्रविधा तत्त्वा प्रव
वाह महे धनि वाग्मती नृदधनाद ति मलिमती ति
शुता ॥ ४ ॥ नाना नृयांग धनि रक्षेय कावक स्व
नृपि नि वरु मूर्ध्नि मिहाद वी प्रका नृप नभा सुत ॥ ५ ॥

वाग्मतीपूतकलालेद्वर्ममय्यानिनाहित ॥ त्वयि
 निमज्जकानाञ्जयायकलालसुनति ॥ ७ ॥ हमाग
 येतिनगायेसर्वालकावर ॥ ८ ॥ रिन। व्याप्यचर्मयिवी
 तायैस्मितानननभासुत ॥ ९ ॥ प्रिभूलंठमनूमाणा
 पुरुकंविजतीकनेः ॥ १० ॥ स्मिताननादवीरतां
 नमाम्यहं ॥ ११ ॥ सर्वयायोघहात्रिरूपेसर्वलाकेनम
 स्तुतमहायाटकनागिनोवनप्रदनभासुत ॥ १२ ॥

तीर्थनूपनदीनाञ्जयानांसंगमाह्वल ॥ डवीरत
 मरुमूर्तिजगन्मचन। नमासुत ॥ १० ॥ वाक्मीचवेष्ट
 वीनोडीमूर्तिस्त्वतामह ॥ ११ ॥ ततामासांसनितांमृ
 र्तिस्मारिनाग्निरसंवहृत ॥ १२ ॥ वाग्मतिशिवगंरगु
 र्तिस्त्वपावनिजिवे। दुर्गैरुवानिसर्वासिडमयर्तुन
 मासुत ॥ १३ ॥ तिस्रकाद्यैर्द्विकादीनांतीर्थनिमयिस
 नितत। सर्वतीर्थमयीसाक्षात्सकलपूचयव्वम् ॥ १४ ॥

वाग्मतीतिवगंरुतिवृक्षसुनस्वतीचवा।यावृयान्मनि
 न्नस्यसर्वपापंरुनाम्यहं॥१४॥तरथाहनेप्रयागं
 स्याददनःसंगमंशुरुं।रुलदंतीर्थकोटीनांकलो
 पापविशेषतः॥१५॥स्नानकालेनलोहस्त्रायः
 प२०वाग्मतीसुवं।वाग्मत्यांस्नानजंप्रथंप्राप्नोति
 निरपया०कः॥१६॥संश्रमजयमाप्राप्तिग्रहपी
 जंविनष्टमिति।कान्ताप्रशंवनंवायूर्यःकीर्तिल

रुसदा॥१७॥पितृस्त्रीवालरगविप्रवधपायेःप
 मृच्यते॥सर्वसुखयमिरथाकाररुस्वकृगकिल्वि
 सेः॥१८॥मद्यपानपत्रद्व्यागम्यागमनकिल्विषे
 :।मरुदाषाहवेःपापेर्मच्यगनायसंशयः॥१९॥
 ॐतिश्रीस्कन्दपूनारुहिमवत्स्वंउठीस्वमूलस्मा
 नंममापं॥॥ॐवाग्मतीदेवीनमः॥ॐवन्देहं
 वाग्मतीदेवीसर्वलाकांश्चताविशीं।नूदमूखाह

ब्राह्मरापूजादिक्रियादानं॥

दक्षिणसमर्पणं॥ श्रीवाग्मये॥ यथाशुद्धिः॥
नमस्कानं कृत्वा॥ ॐ ॥ वेदाशीर्वादं परं ॥ ॐ
पावकानं॥ ॥ ब्राह्मरादिपुण्यं॥ अग्निषकाशीर्वा
दं॥ ॥ वाग्मतीजलनं॥ ॐ देवस्यत्वा॥ ॥ च
दपुन्यनं॥ ॐ यैश्चक॥ ॥ सिद्धं॥ ॐ त्वयि विष्टया॥
पुण्यां॥ ॐ वक्ष्ये स्यत॥ ॥ पुनश्चादिपुण्यं॥ ॐ शु
ॐ

रं सर्वेषां॥ ॥ गतान्वासः॥ ॐ वागीश्वर्ये जस्तु
यस्तु॥ पूर्ववत्॥ वलि विस्तृतं॥ ॥ सूर्य
सादि॥ अस्मद्वाग्मतीपूजासंपूर्णार्थं कृते क
र्मसः सादिरं॥ श्रीसूर्याय नमः॥ ॥
पुण्यं च॥ ॥ अचम्य॥ ॥ ॥ ॥
ॐ श्रीवाग्मतीपूजा॥ ॥ शुभं॥ ॥

ॐ वाग्देवि नमः. कामवीजाये धीमहि । तन्ना
दवी प्रवादयात् ॥ ॥
ॐ वाग्देवि नमः. उक्कसनस्वये धीमहि
तन्नावागी प्रवादयात् ॥ ॥ इति तन्नुसान् ॥

रया गतिर्योग युक्तस्य. वाराणां मृतस्य च ।
सा गतिः स्वानमात्रेण. वाग्मत्यां हरि वासरे ॥
हिमवत्सरेण ॥ आर्त्तभीतकुलादि धि व्याधि ग्रह
भूताय मृत्युं अयस्मारादि निवारणार्थम्. वा
क्यम् ॥ ॥

ॐ नमः वामती देव्यै ॥ श्री वागमती मंत्र स्प नारद
त्रयये ॥ शिरसि ॥ अनुष्टुप् नन्द सेनमः ॥ मुखे ॥
श्री वागमती देवतायै ॥ हृदि ॥ ॐ ऐं वीजायै ॥ लिं
गे ॥ ॐ श्री कीलकाय ॥ पादयोः ॥ ॐ श्री वागमती मं
त्र जपे विनियोगः ॥ सर्वांगे ॥ ॥ अथ अङ्ग न्यासः
॥ ॐ ऐं वां हृदयादिषु दिर्घेन ॥ ॥ अर्घ्य पात्रात्म
पूजान्त्रं ॥ ॥ आसनं ॥ ॐ आधार शतपादि ॥ ८ ॥

ॐ ऐं मीनासनाय ॥ ध्यानं ॥ ॐ ऐं श्वेतां वरं
श्वेतवर्णां श्वेतगन्धानुलेपनां शुद्धां कुम्भं चः
वीणा पुष्पकमेव च करैर्दधन्ती मीनस्थामुक्ता
भरणाभूषिता एवं ध्यात्वा कर्त्तव्याः यजेद्देवी
षडश्रके ॥ ॐ श्री क्रीं ऐं वागमती ध्यान पुष्पं ॥ ॥
मूलेन पाशार्धं च मनीय स्नान पुनरगच मनी
यं नमः ॥ चन्दन सित्पूरं अक्षत यज्ञोपवीत पु

त्रिकोरोपुः३

पंच॥मूलनत्रयाञ्जलि॥ॐ श्रीं देवागमनै
नमोममभारणाधियंवाचमद्रतांप्रदेहि स्वाहा
॥३॥मध्येपुराव॥ॐ २॥ॐ ह्रीं ऐं इशानादि॥
षडस्रकेषुपूर्वादि॥ॐ रुद्रायै २॥ॐ मणिम
न्यै २॥ॐ पूर्णावतै २॥ॐ विष्णुमन्यै २॥ॐ
प्रभावतै २॥ॐ भानुमन्यै २॥ ॥वसुदत्तै॥अ
कारादि॥वस्माराणादि॥८॥ ॥पूर्वादिभूपुरे

॥इन्द्रादिगण॥ ॥पुनर्मध्ये॥ॐ गायत्र्यै २॥ॐ र
सावित्र्यै २॥ॐ सरस्वत्यै २॥हृदयादिर्द॥यथोक्त
श्वेदेवतापूजापूजा॥ ॥धूप॥दीप॥फलने
विश॥ताम्रमूलादि॥चुवा॥अवीरक्षाया॥प्रतिष्ठा
॥ॐ मनोजूति॥जप॥मराडलरत्नोत्रं॥अथा
शक्तिपूर्ववत्॥

